भाग I / II / P. 14 प्राचीन जावा में ब्राह्मण धर्म पर प्रकाश डालें ?

Que 5. Throw light on the Brahmanical religious life of the people of Ancient Java ?

Ans → अन्य क्षेत्रों की भाँति हिन्दनेशिया में भी भारतीय सांस्कृतिक परम्परा ने अपनी छाप पूर्णतया डाल दी थी। लेख, साहित्य और कला के आधार पर सामाजिक तथा धार्मिक व्यवस्थाओं पर सूक्ष्म रूप से प्रकाश डाला जा सकता है।

सुदूर पूर्व में भारतीय संस्कृति के प्रवाह में धर्म ने पूर्ण रूप से अपना योगदान दिया। ब्राह्मण धर्म जावा में ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में फैल चुका था। आठवीं शताब्दी से पौराणिक ब्राह्मण विचार धारा जावा तथा अन्य द्वीपों में प्रवाहित होने लगी। सृष्टि रचयिता ब्रह्म, रक्षक विष्णु और विनाशक शिव व्यक्तिरूप से तथा सामूहिक रूप से पूजे जाने लगे और इनके साथ में अन्य छोटे देवी - देवताओं को भी मान्यता प्राप्त हुई। शैवमत ही ब्राह्मण धर्म का प्रधान अंग रहा और शिव की लिंग तथा पार्थिव रूप में बहुत सी मूर्तियाँ भी बनी। लेखों से प्राप्त सामग्री के आधार पर चंगल के लेखानुसार श्री संजय द्वारा शिव - लिंग की स्थापना एक पहाड़ी पर की गयी थी। शिव की उपासना विस्तृत रूप से की जाती थी। कवि गंगावतरण से भी परिचित था, जैसा कि लेख से प्रतीत होता है। लेख में ब्रह्मा की भी अराधना कही गयी है। और उन्हें धर्म, अर्थ, और काम का स्रोत माना गया है। विष्णु की ~~स्तुत~~ स्तुति शेष नाग की शय्या पर ~~लेटे~~ लेटे लक्ष्मी सहित स्वरूप में की गयी है। शिव को प्रधान स्थान दिया गया है और यही भावना हिन्दनेशिया में शताब्दियों बाद तक जाग्रत रही। जैसा कि रेरलंग के लेख से भी प्रतीत होता है, जिसमें शैव (महेश्वर), सौगत (बौद्ध) और ऋषि (महा - ब्रह्म, ब्रह्मा से संबंधित) सम्प्रदायों का उल्लेख है। अमरमाला अमरकोश पर आधारित ग्रन्थों में भी शिव को गुरु और

ईश्वर बोध कर संबोधित किया गया है और इसकी पूजा चंडियों आंगन के मंदिर से भी होती है। जिसमें प्रधान मंदिर शिव का है। और दोनों ओर विष्णु एवं ब्रह्मा तथा सामने नन्दी का मंदिर है। चंगल के लेख में शिव को संसार का नाशक माना गया है। किन्तु अनेक करुणा और कोमल स्वभाव से भी जिसमें वो प्रसन्न होकर भक्त को वरदान देते हैं। जावानी अपरिचित न थे। महादेव और महाकाल के नामों से उनकी उपासना की जाती थी। महादेव की मुर्तियाँ जो प्रायः स्वतन्त्र रूप से एक मुख वाली भी मिली। जिसमें माथे पर त्रिनेत्र, मौलिक में चन्द्र और कपाल तथा उपवीत के स्थान पर सर्प और चार हाथ दिखाए गए हैं। जिनमें पुस्तक, कमल, कमंडल और त्रिशूल हैं। दो मु हाथों वाली मुर्तियों में चामर और अक्षमाला है। भैरव या महाकाल रूप में शिव की मुर्ति भी जावा में मिली है। और इसमें अनेक उनके मुख पर रौद्रभाव प्रदर्शित हैं। इसका सबसे सुन्दर प्रतीक सिंगसारि के निकट एक मंदिर की मुर्ति है। लेख में इस देवता का नाम चक्र दिया हुआ है। देवता कुत्ते पर बैठे हैं और नग्नावस्था में है। उनके हाथों में खंड, कपाल, त्रिशुल और डमरु है। मौलि में कपाल बंधे हुए हैं तथा वे रुड-मुंड की माला पहने हुए हैं।

शान्त तथा सौम्य स्वरूप में शिव के अन्य रूप महादेव और भैरव की शक्तियों की मुर्तियाँ भी जावा में मिली। जिनसे ज्ञात होता है कि वहाँ के निवासी इनसे अनभिज्ञ न थे। महादेव की शक्ति देवी, महादेवी, पार्वती अथवा उमानाम से प्रसिद्ध थी। इन शक्तियों में महिषासुर मर्दिनी की मुर्ति विशेषतया उल्लेखनीय है जो 6.8.10 अथवा 12 हाथ वाली दिखायी गयी है और बैल के रूप वाले असुर को और मार रही है। महाकाली के रूप में भैरव की शक्ति भैरवी मृतक के शरीर पर बैठी दिखायी गयी है और मनुष्य के कपाल ही उनका श्रृंगार एवं अलंकरण है। उनके एक हाथ में त्रिशुल है और दूसरे में रक्त रखने के लिए पात्र है। इन दोनों के

अतिरिक्त अर्धनारीश्वर के रूप में भी शिव और दुर्गा की संयुक्त मूर्तियाँ मिली हैं। दाहिना भाग शिव का है और दुर्गा का है।

शिव और पार्वती तथा दुर्गा के अतिरिक्त उनके पुत्र गणेश और कार्तिकेय को भी जावा में देवत्व स्थान प्राप्त हुआ और उनकी मूर्तियाँ मिली हैं। गजमुखी गणेश को विघ्न विघ्ननाशक के रूप में जावा में पूजा जाता था और प्रतिमा लक्षण के अनुसार उनके चार हाथ हैं। चंडीबनोम के गणेश की मूर्ति सबसे सुन्दर है। रण देवता कार्तिकेय की मूर्ति भी जावा में मिली और वह मोर पर सवार है।

जावा में लिंग रूप में भी शिव की उपासना की जाती थी। स्टुटरहाइम के मतानुसार इसका पूर्वजों की उपासना से सम्बन्ध रहा है। जो भारतीयों के आगमन से पहले भी जावा में प्रचलित थी पर वास्तव में लिंग स्थापना का सम्बन्ध शैवमत से ही हो सकता है और इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है। इन दोनों के अतिरिक्त शिव की उपासना भट्टार गुरु के रूप में भी की जाती थी। जिसका सम्बन्ध अगस्त्य ऋषि से था। चंडीसारी से प्राप्त अगस्त्य की मूर्ति इसी भावना का प्रतीक है।

शिव के अतिरिक्त विष्णु और ब्रह्मा की भी उपासना यहाँ की जाती थी जैसा कि यहाँ से प्राप्त मूर्तियों से प्रतीत होता है। विष्णु का स्थान शिव के बाद था और उनकी चर्तुबाहु की मूर्ति शंख, गदा, चक्र, और पद्म धारण किये हुए मिली है। उनकी शक्ति श्री या लक्ष्मी भी कमल, चमर, माला लिए दिखायी गयी है। अनन्तशयन की अवस्था में भी विष्णु को शेषनाग की शय्या पर दिखाया गया है। जिसका विवरण चंगललेख में मिलता है। कृष्ण, राम, मत्स्य, वराह और नृसिंहावतार रूप में उनकी मूर्तियाँ बनायी गयी जिससे प्रतीत होता है कि जावा निवासियों को पौराणिक कथाओं के आधार पर उनके विभिन्न अवतारों का ज्ञान था। सम्भवत: राजाओं

भी वराहवतार के रूप में मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है। विष्णु की मूर्ति के साथ-साथ दो अन्य मूर्तियाँ भी हैं जो लक्ष्मी और सत्यभामा प्रतीत होती हैं। यद्यपि वैष्णव मत और इनमें जानने वालों की जावा में कमी नहीं थी पर शैवमत उसके देवताओं और अनुयायियों के और स्थान प्रसारण था। जिस विचार धारा के अन्तर्गत शिव और बुद्ध को एक दूसरे के निकट लाया गया, जिसमें शिव की प्रधानता रही उसी के अनुसार विष्णु का भी स्थान शिव के बाद ही रहा। साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में शिव की ही प्रधानता रही।

ब्रह्मा की उपासना की जाती थी। चतुरानन के रूप में हंस पर आरूढ़ माला, चमर, कमल और कमण्डल लिए उनकी कई मूर्तियाँ मिली हैं। उनकी शक्ति सरस्वती भी मोर पर बैठी हुई दिखायी गयी हैं। व्यक्तिगत मूर्तियों के अतिरिक्त ब्रह्मा विष्णु और महेश की संयुक्त त्रिमूर्ति भी जावा में मिली। बीच में शिव का मुख है और अन्य दो ओर ब्रह्मा और विष्णु हैं इनके अतिरिक्त जावा में अन्य ब्राह्मण देवी देवताओं का भी स्थान था जिनकी मूर्तियाँ मिली हैं। जैसे यम, वरुण, अग्नि, इन्द्र, कुबेर और सूर्य को उसी अवस्था में दिखलाया गया है जैसे कि भारतीय ब्राह्मण और बौद्ध कला में निकली हुई तोंद तथा धन के थैले के रूप में उनको चित्रित किया गया है। उनकी स्त्री हारीती से भी जावानी अनभिज्ञ न थे। सात घोड़ों द्वारा खींचे हुए रथ पर सूर्य तथा ध्वजा लिए हुए चन्द्र और मकर आरूढ़ धनुष-बाण लिए कामदेव की मूर्तियाँ भी जावानी कलाकारों ने धार्मिक विचार धारा के अन्तर्गत बनायी। मूर्तियाँ पत्थर या कांसे की बनी पर उनके निर्माण में वह धार्मिक प्रेरणा थी। जिसने साहित्यिक क्षेत्र में भी अपना अंशदान दिया। धार्मिक साहित्य में पुराणों की भाँति

25

तन्तु' नामक साहित्य है। जिसमें देवी देवताओं को नाम
उनसे सम्बन्धित कथाएँ तथा विश्व भूगोल इत्यादि
का उल्लेख है। इसके अध्ययन से ज्ञात होता कि
किस प्रकार से भारतीय पौराणिक विचारधारा ने जावा
में प्रवेश कर अपना स्थान बना लिया था।

Scanned with CamSc